के माध्यम से चित्रित किया है जो की इस प्रकार स्पष्ट होता है, "अभी पेपर मे छापा था। किस प्रदेश मे किसानो को दस रूपये के चौक दिए गए। दस रूपये बताइए आप भी क्या कोई भी नुकसान ऐसा हो सकता है जिसमे केवल दस रूपय ही मुआवजा मिले हम आज तक अग्रेजो बनाए हुए रेवेन्यू देने के लिए नही बल्कि ओर राजस्व की माफी के लिए बनाए गए थे इन कानूनो इन नियमो को देख कर लगता है कि देश मे अभी औपनाभिक साम्राज्य है, हम बभी तक आजाद हुए नही हैं। अगर आजाद हो गए होते तो कम से कम यह सर्टिकानून बदले होते अब तक रमेश चौरासिया ने अपनी जानकारी की बात मे शामिल किया।"

किसान जीवन विभिन्न यातनाओं समस्याओ और पीडाओ से ग्रस्त रहता है। किसान का अधिकांश जीवन आपदाओ से ग्रस्ति रहता है । किसान का अधिकांश जीवन आपदाओ से ग्रसित रहता है । किसान के लिए आवास की समस्या प्रत्येक भारतीय किसान के लिए गम्भीर समस्या है क्योकि उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है उन्हे मकान बनाने के लिए कर्ज लेना पडता है। इस चुनौति को पकज सुबीर ने 'अकाल मे उत्सव' उपन्यास मे रामप्रसाद नामक किसान से चित्रित किया द्य रामप्रसाद के पिता ने पहले एक मकान बनवाया था, परन्तु अब वह खडंहर हो चुका है। वह कई बार सोचता है। कि नया घर बनाए परन्तु पैसो का अभाव होने के कारण वह इस वर्णन अबकया है कि उन्हे सोने का भी डर रहता है इन शब्दो के जुडाव से पता चलता है कि किसान जीवन जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त अभाव ग्रस्त रहता है। जिसका चित्रण रामप्रसाद नामक किसान पात्रके माध्यम से दर्शाया है। 'पिता ने जो कच्चा घर बनवाया था उसे भी समय ने कोच कोच कर अब खण्डर सा कर दिया था उसी खण्डर मे रामप्रसाद का परिवार रहता था पत्नी कमला और तीन बच्चे यह था उसका परिवार दो एकड जमींन मे परिवार का गुजारा कैसा होता था, यह रामप्रसाद को ही पता था उसमे भी भागीरन का हिस्सा निकालना। फसल आती, पैसा नही आता, मुटठी मे बस पसीने की बुंद रह जाती है। रामप्रसाद खुद भी दुसरो के खेतो मे कुछ करके थोडा बहुत कमा लेता दिन रात रहता अपने खेतो मे भी और अधवटिया से लिए गए खेत मे भी कहने को किसान और काम से मजबूर हर बरसात मे घर की दीवारे डराती कि अभी लहराकर झुकेगी और पांचो प्राणियो को जीवित कब्रे बना देगी हर बरसात मे निर्णय होता था किइस बार सोयाबीन की फसल मे कम से कम एक कमरा तो ठीक करवाना है। जिसके बरसात का समय बिना किसी डर के बिताया जा सके। बरसात बीत जाती है और बात भी जाती है।" स्पष्ट है कि किसान वर्ग समस्या की उधेडबून कभी खत्म नहीं होती हमेसा कुछ बुनता ही रहता है। वह आगामी भविष्य के सपने संजोता है परन्तु कर्ज की मार और कुर्की की मार से एक आवास का भी सपना पूरा नहीं हो पाता है। यह किसान जीवन की सबसे बडी विडम्बना है। भारतीय किसान के पास अगर जमीन नहीं है तो वह अपनी खेती नहीं कर सकता। सरकार के केवल अपना फायदा देखती है। वह सिर्फ अपनी योजनाओं को लागू होते देखना चाहती है। किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह अपने घर की वस्तुएँ बेचने के लिए मजबूर हो जाता है। क्योंकि किसान परम्परा पोषित होने के कारण वह परम्परा निभाने के लिए मजबूर होता है। इस स्थिति का चित्रण पंकज सुधीर ने इस उपन्यास मे रामप्रसाद नाम किसान पाथ के माध्यम से चित्रित किया है जब वह अपनी बहन की सास के क्रिया क्रम करने के बारे में सोचता है, तो वह अपनी पत्नी के जेवर गिरवी रखता है। राम प्रसाद सोचता है कि किसानी परिवार में उसकी पत्नी के बाद उसके जेवर धीरे-धीरे उतरने लगते है। वह सोचता है उसकी पत्नी के जेवर गिरवी रखने के बाद जब सुनार की सम्पति बनने जा रही है जिस चित्रण इस प्रकार चित्रित होता है। किसान के जीवन में बढते दुखा उसकी पत्नी के शरीर पर घटते जेवरों से आंकलित किये जा सकते है। "नई बहु जब आती है तो नए घाघरा लुगडी पीलिया के सान सोडी बनती झालर लच्छे करधानी में चमकती है। फिर से धीरे-2 उम्र बढने के साथ साथ शरीर पर एकदृएक जेवर कम होता जाता है । जेवर तो जाते है और किसान के घर की चीज एक बार गिरवी रखी जाए तो कब है पहले सोने के जेवर जाते है। फिर उसके पिदे चांदी के जेवर हर जेवर गिरवी के लिए जाता है तो इसके पक्के मन के साथ है। कि दो महीने बाद फसल आएगी तो सबसे पहला काम उस जेवर को छूडाना ही है लेकिन जब यह पहला काम अगर सच में पहले जाता तो उस देश में सरकार की तिजौरियां और उसकी तोने इतनी कैसे फूल पाती। कई बार तो एसा लगता है कि बहू के चढाव के जेवर उसी सुनार के पास लिए पहूंच जाते सुनारों को भी पता होता था की आज नहीं तो कल इन जेवरों को हमारे पास हीं आना है, पहले गिरवी के रूप में फिर डुब कर पूरे रूप में ब्याज पर ब्याज और ब्याज के ब्याज पर भी ब्याज रकम बढती जाती है। उम्मीद डुबती जाती है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसान जीवन विपतियों एवं पीडाओं का दस्तावेज बनकर रह जाता है। किसान समाज की व्यवस्था को बनाए रखने में अपनी भागीदारी विशेष रूप से चित्रित रखती है। राजस्व प्रणाली की वसूली को पूरानी प्रणाली यह भी थी कि पैदावार का एक निश्चित हिस्सा ही राजस्व घोषित कर दिया जाता था किन्तु विविध कारणो से अंग्रेजो के आगमन के पहले भूमि कभी भी पूर्णत निजी सम्पति के तौर पर किसी के अधिकार में नही रही उत्पादन के लाभांष के पारम्परिक हिस्सों में राजस्व अधिकार होता था जिसे भू राजस्व के नाम से जाना जाता था। भारतीय शासक अपना अधिकांश रक्षा व पारम्परिक रक्षा व पारम्परिक तौर पर भूमि से प्राप्त करता था।

इस प्रकार पंकज सुधीर ने अकाल में उत्सव 'उपन्यास में दूषित राजस्व प्रणाली का चित्रण किया है रामप्रसाद नाम किसान पात्र जो कि गरीब किसान है वह आर्थिक रूप से कमजोर है और बैंक के कर्ज में डूबा हुआ है वह अपने घर को चलानें के लिए अपनी पत्नी के जेवरों को गिरवी रखता है। इस उपन्यास मे चित्रित किया गया है कि अकाल पडा हुआ ह लेकिन राजस्व अधिकारी अपने ग्राट को कब्जूम करने में लगे हुए है। जिसे हमे राजस्व अधिकारियों की हरकतो का पता चलता है। जब राकेश पाण्डे और अन्य अधिकारियों आपस में चर्चा

Scanned with OKEN Scanner